सतयुग दर्शन वसुन्धरा
मैं ब्रह्म हूँ

ध्यान-कक्ष

समभाव-समदृष्टि का स्कूल

Symbol of oneness
DHYAN-KAKSH
SCHOOL OF EQUANIMITY & EVEN-SIGHTEDNESS

सत्य/सच्चाई परिभाषा

एकता का प्रतीक

सतयुग की पहचान है यह, मानवता का स्वाभिमान है यह

SATYUG DARSHAN TRUST (REGD.)

मार्गदर्शक बल
(Guiding force)
सतवस्तु का कुदरती ग्रंथ

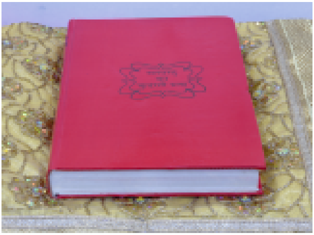

पढ़ो, समझो व अमल में लाकर
श्रेष्ठ मानव बन जाओ।

इसे पढ़ने के लिए इस QR Code को स्कैन करें।

प्रकाशक
सतयुग दर्शन ट्रस्ट (रजि.)
"वसुन्धरा" ग्राम भूपानी–लालपुर रोड फरीदाबाद–121002 (हरियाणा)
ई–मेलः info@satyugdarshantrust.org | website: www.satyugdarshantrust.org
© सर्वाधिकार सुरक्षित सतयुग दर्शन ट्रस्ट (रजि.) | ISBN : 978-93-85423-78-9
प्रथम संस्करण | अप्रैल, 2025

साडा है सजन राम, राम है कुल जहान

अर्थात्

ईश्वर हमारा मित्र/प्रियतम सर्वव्यापक है,

उसी को जानो, मानो व वैसे ही गुण अपनाओ।

शब्द है गुरु, शरीर नहीं है,

अर्थात्

ज्ञानी को नहीं, ज्ञान को अपनाओ और

निमित्त में नहीं नित्य में श्रद्धा बढ़ाओ।

इस पर सुदृढ़ता से डटे रह,

इस अटल सत्य पर स्थिर बने रहो

ओ३म् अमर है आत्मा,

आत्मा में है परमात्मा

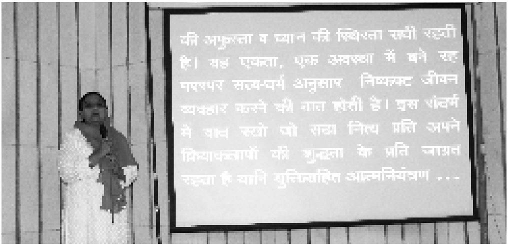
की अफुल्ता व ध्यान की स्थिरता सधी रहती
है। यह एकता, एक अवस्था में बने रह
परस्पर सत्य-धर्म अनुसार निष्कपट जीवन
व्यवहार करने की बात होती है। इस संदर्भ
में याद रखो को सदा नित्य प्रति अपने
क्रियाकलापों की शुद्धता के प्रति जाग्रत
रहना है यानि सुनियोजित आत्मनियंत्रण ...

सच्चाई
धर्म
सम

सत्य/सच्चाई - परिभाषा

सत्य-शाब्दिक अर्थ

सत्य का शाब्दिक अर्थ है, जैसा हो अथवा होना चाहिए - ठीक वैसा। यथार्थ तत्व, पारमार्थिक सत्ता, वह वस्तु जो सदा ज्यों की त्यों रहे, जिसमें किसी प्रकार का विकार या परिवर्तन न हो, जैसे ब्रह्म सत्य है व जगत मिथ्या है, आत्मा सत् है और शरीर असत् है। इसके अतिरिक्त यथातथ्य यानि जो बात जैसी है उसके सम्बन्ध में वैसा ही कथन कहना यानि वास्तविक/ असल बात कहना, सही, प्रमाणिक, न्यायसंगत और धर्म की बात करना भी सत्य के अंतर्गत आता है। चार युगों में से पहले युग अर्थात् कृतयुग को भी सत्-युग या सत्य युग कहा जाता है। सत्य को सत् भी कहते हैं। सत् का मतलब है होने का भाव, विद्यमानता, दृढ़ व स्थिर, किसी वस्तु का मूल तत्व या सार भाग, अस्तित्व, सत्ता, जीवनशक्ति, ब्रह्म व मनोहर।

सत्य -विस्तारित अर्थ

सत्य की परिभाषा के दृष्टिगत स्पष्ट होता है कि जो पारमार्थिक सत्ता सर्वदा, तीनों कालों में समरसता से विद्यमान है वह सत्य है। जो कभी नहीं बदलती यानि जिसमें किसी भी प्रकार का विकार या परिवर्तन संभव नहीं होता वह सत्य है। जो यथार्थ व परिपूर्ण है, स्थिर, दृढ़ व सर्वव्यापी है वह सत्य है। जो ज्ञानमय व आनन्द स्वरूप है तथा सूक्ष्म से भी सूक्ष्मतर तथा महान से भी महानतर है, वह सत्य है। जो समस्त कारणों का भी कारण है व जिससे प्रत्येक वस्तु उद्‌भूत है यानि जिससे असत् जड़ संसार प्रकाशमान हो रहा है वह पारमार्थिक सत्ता यानि ब्रह्म ही सत्-वस्तु है तथा अन्य सभी चीज़ें असत् हैं। इसीलिए तो परमेश्वर कहते हैं :-

सत् सत् सत् सत् सत् सत् सत्
हम प्रकाशित प्रकाश हमारा
प्रकाश रहा जग सारा,
ओही...ओही...ओही...ओही

प्रकाश रहा जनचर, बनचर, जड़ चेतन
प्रकाश रहा सिरजनहारा
ओही...ओही...ओही...ओही
कीड़ी कोलों हाथी अन्दर,
ब्रह्मा कोलों तृण अन्दर
आ रहा अपर
अपारा...ओही...ओही...ओही...ओही

सत् अमन सत् चमन,
सत् अमन सत् चमन, सत् अमन सत् चमन
सत् अमन सत् चमन, सत् अमन सत् चमन,
सत् अमन सत् चमन
सत् अमन सत् चमन

सरल शब्दों में कहें तो सत्य हर वस्तु या पदार्थ का मूल तत्व यानि जीवन का सार है। सत्य पर ही सब आश्रित रहते हैं पर सत्य किसी पर निर्भर नहीं क्योंकि वह तो स्वयंभू, स्वतन्त्र और सर्वाधार है। सत्य ही शाश्वत अथवा नित्य प्रकाशित भगवान है। सत्य ही मम् स्वरूप यानि असलियत अपना-आप

है। तभी तो कहा गया हैः-

ओ३म् तत् ओ३म् सत् ओ३म् जप ओ३म् तप।
ओ३म् दा है विस्तारा, ओ३म् जपो,
जपो ओ३म् ओंकारा।।

(सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ, सप्तम सोपान,
तृतीय भाग कीर्तन न० 28)

ज्ञात हो सत्य कभी छिप नहीं सकता क्योंकि सत्य स्पष्ट व सर्वमहान है। सच सोने की भांति शुद्ध और खरा है इसलिए वास्तविक बात है। सत्य से बढ़कर कोई धर्म नहीं क्योंकि सत्य अमृत/मोक्ष प्राप्ति का मार्ग है। इसी उपलब्धि के दृष्टिगत सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में कहा गया हैः-

सच बोलो, सच चानणा है, झूठ अन्धेरा है।
सच घर में वर्तो और दुनियां में फैलाओ।।

(सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ, सप्तम सोपान,
बुधवार का पहला बोर्ड, कीर्तन न० 30)

अर्थात् सत्यवादी बनो क्योंकि सत्य वह प्रकाश/आलोक है जिसके तहत् वस्तुओं का यथार्थ रूप दृष्टिगोचर होता है यानि यह संज्ञान की, चेतनता की, प्रबुद्ध होने की अवस्था है। इसके विपरीत झूठ अंधकार है, अज्ञान है, जड़ता की, अचेतनता की, निराशा की तथा अपनी ही वास्तविकता के प्रति अनभिज्ञ हो जीवन के संकटग्रस्त हो जाने की स्थिति है। ऐसा न हो इस हेतु ही शास्त्र कह रहा हैः-

असत्य नूं भैणां छोड़ के,
सत्य नूं लवो धार
महाबीर जी दी शरणी आवो,
बेड़ा कर देसन पार

(सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ, प्रथम सोपान,
भजन न० 53)

अर्थात् जो मिथ्या यानि झूठ है, असत्य है, उसे त्याग कर सत्य यानि जो ब्रह्म है, यथार्थ है, ठीक है, प्रमाणिक है व न्यायसंगत और धर्म की बात है उसे अंगीकार कर स्थिर हो जाओ और सत्यात्मा

नाम कहाओ। यहाँ सदैव याद रखो कि आत्मा सत् है और शरीर असत् है। अतः काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार युक्त शारीरिक भाव-स्वभाव छोड़ आत्मीयता से परिपूर्ण भाव-स्वभाव अपना श्रेष्ठ मानव बन जाओ। हम ऐसा बनने में कामयाब हों इस संदर्भ में शास्त्र कहता है:-

सत है गुरु, सत नाम सत् ध्यान लाणा सीखो,
सजनों सत सत बड़ा है महान
सत् सत् वर्त-वर्ताओ करना सीखो,
सजनो सत सत करो प्रवान
सत् सत् बोलना सीखो सजनों सत् आप
पढ़ो ते सजनां नूं पढ़ाओ
इसे शब्द नाल हिवे विश्राम

(सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ, सप्तम सोपान,
द्वितीय भाग, कीर्तन न० 34)

अर्थात् सत् ही गुरु यानि आत्मिक विद्या या कला सिखाने वाला व सच्ची दीक्षा देने वाला उस्ताद है

व सत् ही आत्मबोध कराने वाला सांचा शब्द ब्रह्म यानि सांचा नाम है। अतः समस्त अन्य आडम्बर व कर्मकांड त्याग कर एकाग्रचित्तता से ख़्याल ध्यान वल व ध्यान प्रकाश वल कर, सत् का मानसिक प्रत्यक्ष करने की यानि उसे अपने विचार, ख़्याल व स्मृति में लाकर उसका चिंतन व मनन करने की कला सीखो। इस तरह सर्वमहान सत् में अपने मन को निमग्न/लीन कर, उससे सम्बन्धित नीति-नीतियों व रस्म-रिवाज़ों को अपने आचरण व व्यवहार में ले आओ और उसे अपने मन-वचन-कर्म द्वारा प्रमाणित एवं प्रतिष्ठित करो। आशय यह है कि ईमानदारी से सत् शब्द का मन ही मन उच्चारण करते हुए अपने विचारों व भावों को यथार्थता अनुरूप साधने व सत्य कथन/वचन/बात कहने की युक्ति सीखो। इस तरह विधिवत् अध्ययन व अभ्यास द्वारा खुद तो सत् शब्द में सन्निहित गुप्ट अर्थ और तात्पर्य को जान-बूझ सत्य ज्ञान प्राप्त

करें ही, साथ ही औरों को भी ऐसा करने में प्रवृत्त करें। ज्ञात हो कि इस प्रकार सत् यानि ब्रह्म शब्द के महात्मय का यथार्थ बोध करने पर ही विश्राम यानि परम शांति प्राप्त कर पाओगे।

शास्त्रविहित् इन शब्दों से स्पष्ट होता है कि सत् ही परम ज्ञान का स्रोत तथा सत् ही ध्यान है। सत् ही विचार और सत् ही मुकाम है यानि सत् ही साध्य है और सत् ही साधना। सत् ही धर्म है, सत् ही शांति है व आत्मसाक्षात्कार करने का यानि मुक्ति का द्वार है। इस महत्ता के दृष्टिगत आप भी आत्मा में व्यापत परमात्मा का दर्शन पाने हेतु, अपने शरीर रूपी मकान को सचखंड बनाओ क्योंकि शास्त्र कह रहा है:-

'सचखंड वस्से, वस्से निरंकार,
ओ सचखंड वस्से, वस्से निरंकार'।

(सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ, षष्टम सोपान,
कीर्तन न० 30)

सत्य का सर्वश्रेष्ठ अभिनंदन

ज्ञात हो सत्य का सर्वश्रेष्ठ अभिनंदन सत्य को निष्कामता से आचरण में लाना है। इस हेतु आवश्यक है कि हम सत्य धारण कर सत्य ही बोलें व सत्ययुक्त आचार-व्यवहार द्वारा सत्य को ही प्रतिष्ठित करें यानि हमारा मन-वचन और कर्म तीनों सत्यमेव हो। इसी बात को और अच्छे से समझने हेतु जानो किः-

जैसा हमें गुरुमत अनुसार या ज्ञानेन्द्रियों द्वारा प्रत्यक्ष ज्ञान हो, ठीक वैसे ही भाव का दूसरों में संचार करने का संकल्प, मन का सच्चा होना कहलाता है।

यथातथ्य भाव देने का मानसिक संकल्प रखते हुए हम मुख से सदा यथार्थ वाक्य व वाणी उच्चारित करें, यह वाणी का सच्चा होना कहलाता है।

फिर जो वाणी हम मुख से बोलें तद्नुसार ही कर्म यानि आचरण करें। यह कर्म का सच्चा होना कहलाता है। इस प्रकार मन-वचन-कर्म से सत्य को

आत्मसात् करना किसी तप से कम नहीं। इस तप के प्रभाव से मनुष्य के समस्त पापों का नाश हो जाता है और मन-चित्त में सत्य धारणा, सत्य वृत्ति, सत्य प्रेम, सत्यनिष्ठा, सत्यपरायणता, सात्विकता, स्वच्छता, स्पष्टता, सचेतनता, सज्जनता, विश्वसनीयता, निर्भयता, आदर्शवादिता पनपती है और मानव का ईश्वरत्व यानि असलियत स्वरूप प्रकट हो उठता है। इस संदर्भ में सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में भी कहा गया है :-

सच नूं धारण करके, जेहड़ा सच कमावे
बेख़ौफ़ा, बेख़तरा, बेडर ओ हो जावे।
निर्भय निर्वैर ओन्हु मिले, त्रिलोकी दी कुर्सी
कैसा ओ चमक रिहा चमके ओ सुजान,
जपो भगवान जपो भगवान।।

(सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ, सोपान तृतीय,
कीर्तन न० 60)

सत्य की इसी महत्ता को समझते हुए व इसे जीवन का सर्वोच्च मूल्य जानते हुए सत्य की साधना युग-

युग से ऋषि-मुनि कर रहे हैं। अतैव सत्य के साधक बन, सत्य को जीवन में उतार लो यानि आत्मसात् कर लो। सत्य से अलग आपकी कोई सत्ता न रहे। भौतिक जीवन हो या आध्यात्मिक, व्यापारिक हो या सामरिक (युद्ध क्षेत्र), कलात्मक हो या यान्त्रिक, सर्वत्र सत्य के महत्त्व को समझते हुए उसे ही अपनाओ और जय-पराजय को समान समझते हुए सदैव सत्य भाषी व सदाचारी बने रहो।

निष्कर्ष

सत्य के विषय में हुई विवेचना से स्पष्ट होता है कि ईश्वर सत्य है व सत्य ही ईश्वर है। अतः स्वार्थपरता छोड़ सच्ची खुशी की तलाश करो यानि अपने सत्-स्वरूप का विचार करो। इस हेतु हर पल सत् का सिमरन करो और सत् विश्वास यानि सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ ईश्वरीय सत्ता के प्रति दृढ़ विश्वास करो। आशय यह है कि सत् आत्मा को ही देह व जगत का आधार मानकर,

शरीर के सुख-दुःख को ईश्वरीय आज्ञा समझकर स्वीकार करो और सत् पुरुषार्थ द्वारा हर पल ईश्वरत्व प्राप्ति का, लगन से प्रयास करो। इसके अतिरिक्त सत्संगति यानि सत् शास्त्र के विचार द्वारा सद्बुद्धि का विकास करो और सच बोलचाल, सच खानपीन, सच रहन-सहन, सच वर्त्त-वर्त्ताव दर्शा कर दोनों नैनों व शरीर रूपी मकान में सच्चाई का विस्तार करो। इस तरह शरीर को सचखंड बना व सत् कर्मों को धारण कर, सात्विकता का अपने मन-वचन-कर्म में प्रसार करो और सत् सेवा में निष्काम भाव से जुट प्राणी मात्र के कष्टों का निवारण करो व सत् पद को प्राप्त करो।

Learn the science of inner dimensions

at **Dhyan-Kaksh**

School of Equanimity & Even-sightedness

विषय

ध्यान-कक्ष

- ध्यान-कक्ष यानि समभाव-समदृष्टि का स्कूल (परिचय)

आत्मज्ञान

- आत्मज्ञान
- आत्मज्ञानी की पहचान
- आत्मिक ज्ञान के लिए पहली आवश्यकता
- आत्मिक ज्ञान एवं भौतिक ज्ञान में अंतर
- आत्मिक ज्ञान प्राप्ति से लाभ

शरीर/प्राण/भाव/दृष्टि को सम रखना

- शीश अर्पण व शारीरिक समता साधने का महत्त्व
- प्राण को सम रखने की कला
- भाव
- समभाव
- समभाव साधना
- समदृष्टि
- समबुद्धि एंव समभाव-समदृष्टि का व्यावहारिक रूप

अपनी पहचान

- निज मानव स्वरूप की पहचान
- यथार्थ ब्रह्म स्वरूप की पहचान
- ब्रह्म
- शब्द ब्रह्म
- ओ३म शब्द की महानता व महत्ता

समभाव-समदृष्टि का कायदा

- जिह्वा स्वतन्त्र अर्थात् आहार एवं वाणी संयम
- संकल्प स्वच्छ
- दृष्टि कंचन

आत्मविजय

- आत्मनिरीक्षण
- आत्मसंयम/आत्मनियन्त्रण (भाग-1 और-2)
- आत्मानुशासन एवं आत्मविजय

विचार एवं विवेक

- विचार
- विवेक
- विवेक जाग्रति
- विवेकशील मानव की पहचान

Offline classes and activities

Every Sunday from 12.45 pm to 1.45 pm

at Dhyan-Kaksh, Satyug Darshan Vasundhara,
Bhopani-Lalpur Road, Greater Faridabad - 121002

Online classes can be viewed at

Learn the science of inner dimensions

at **Dhyan-Kaksh**

School of Equanimity & Even-sightedness

विषय

मानवता के गुण

- संतोष-परिभाषा
- संतोष विकसित करने का साधन
- धैर्य-परिभाषा
- धैर्य का व्यावहारिक रूप
- धीर व्यक्ति की पहचान व धैर्य धारणा से लाभ
- सत्य-परिभाषा
- सत्य को विकसित करने का साधन
- सत्-संगति की महत्ता
- सत्यभाषी बनने की महत्ता
- धर्म-परिभाषा
- धर्म का विषय एवं उद्देश्य
- धर्म के निमित्त समर्पण
- निष्कामता-अर्थ
- निष्काम रास्ते की बाधा एवं उससे उबरने की युक्ति
- परोपकार

चित्त-वृत्तियों के निरोध का साधन

- अभ्यास-अर्थ
- अभ्यास सफलता का मूल
- वैराग्य
- वैराग्य-कसौटी
- मौन-अभिप्राय
- मौन और वाणी
- मौन का जीवन महत्त्व

Offline classes and activities
Every Sunday from 12.45 pm to 1.45 pm
at Dhyan-Kaksh, Satyug Darshan Vasundhara,
Bhopani-Lalpur Road, Greater Faridabad - 121002

Online classes can be viewed at

आप इस विषय का वीडियो निम्नलिखित लिंक (QR code) पर स्कैन करके देख सकते हैं

View this class by scanning this QR code link

Initiatives of Satyug Darshan Trust (Regd.) on Humanity and Ethics

INTERNATIONAL HUMANITY OLYMPIAD	HUMANITY DEVELOPMENT CLUB	INTERNATIONAL OPEN ORATORY CONTEST	INTERNATIONAL OPEN POETRY RECITATION CONTEST
www.humanityolympiad.org	www.awakehumanity.org	www.dhyankaksh.org	www.dhyankaksh.org

For FREE workshops in your School, College and groups

Scan for Dhyan-Kaksh Social Media

Contact

Mobile : +91 8595070695

Email: contact@dhyankaksh.org

Website: www.dhyankaksh.org

Scan for Dhyan Kaksh Location

https://bit.ly/3v4O8B2

Disclaimer: The contents of this book are intended to foster universal human values, consciousness, fraternity, and love for humanity without endorsing or promoting any specific religious belief